SOCRATES
An International multi-disciplinary multi-lingual Refereed and Indexed Scholarly Journal
Edition - II Vol: II Issue- June 2014
ISSN 2347-6869

निर्गुण प्रेम मार्गी सूफी संत कवि एवं उनका काव्य, ज्ञान मार्गी संत काव्य धारा एवं निर्गुण प्रेम मांर्गी सूफी संत काव्य धारा में साम्य एवं वैषम्य।

डॉ . आभा रानी*

साम्य

1. **निर्गुण, निराकार ब्रह्म पर विश्वास–**

कबीर, नानक, दादू आदि संत कवि और प्रेममार्गी सूफी कवि निर्गुण निराकार ब्रह्म पर समान रूप से विश्वास करते है। कबीर अपनी आत्मा को प्रेमिका के रूप में और ब्रह्मा को अपने प्रियतम राम के रूप में कल्पित करते हैं। जबकि जासी अपनी आत्मा को पुरूष रूप में और अपने आराध्य खुदा या अल्लाह को प्रियतमा के रूप में देखते हैं। दोनों में समान रूप से अपने आराध्य को पाने की लगन है। कबीर ने अपने इसी आराध्य के संबंध में कहा है–

"अलख निरंजन लखै न कोई। निरमै निराकार है सोइ।
सुनि असथूल रूप नहीं रेखा, द्रिष्ट अर्दिष्ट छिप्यों नहीं पेखा।।
अजरा अमर कथै सब कोई, अलख न कथणा जाई।
नाति सरूप मरण नही जाके, घटि–घटि रहो समाई।।

जायसी के पद्मावत में अद्वैतवाद की झलक स्थान–स्थान पर दिखायी देती है। अद्वैत वाद के अन्तर्गत दो प्रकार के द्वैत का त्याग किया जाता है। आत्मा और परमात्मा के द्वैत का तथा ब्रह्म और जड़ जगत के द्वैत का। इनमें से सूफियों का जोर पहले मत पर ही है। यजुर्वेद के वृहरारव्यक उपनिषद का 'अहं ब्राह्मास्मि' वाक्य जिस प्रकार की एकता और अपरिछिन्ता का प्रतिपादन करता है। उसी प्रकार सूफियों का 'अनलहक'वाक्य भी। इस अद्वैतवाद के मार्ग में अहंकार बाधक होता है। यह अहंकार यदि छूट जाय तो ज्ञान का उदय हो जाय कि 'सब मैं ही हूँ मुझसे अलग कुछ नही–

'हौं हौं कहत सबै मति खोई। जौ तू नाहिं आहि सब कोई।'

आपुहिं गुण सो आपहिं चेला। आपुहि सब और आपु अकेला।।

'अखरावट' में जायसी ने इस तत्व की अनुभूमित से ही पूर्ण शांति बतायी है–

'सो ज्हं सोडहं बसि जो करई। सौ बूझै, सो धीरज धरई।

इस सोऽहं। (मैं वह हूँ अर्थात् ब्रह्म हूँ) की अद्वैत भावना द्वारा जायसी निर्गुण ब्रह्म पर अपनी आस्था प्रकट कर देते हैं। अन्य सूफी कवि भी उनके अनुयायी हैं।